आपातकाल में सृजन फुलवारी

उमा सुहाने

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

उमा सुहाने

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-168-8

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेंल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020 उमा सुहाने

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY UMA SUHANE

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेंरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेंशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	भारत में मोदी जी	6
2.	बुंदेलीभाषा में कोरोना	7
3.	महामारी का भय	8
4.	किसान की आपदा	9
5.	एक दिया जलाएं	10
6.	प्रकृति का कहर 2013	11
7.	नव वर्ष पर शुभकामना	12
8.	विचारों को लगाम दो	13
9.	हिंदी का महत्व	14
10.	सब कुछ बदल गया	15
11.	गुरु की महिमा	16
12.	मानव वही महान है	17
13.	जल का जानो मोल	18
14.	मानव संरक्षण	19
15.	उत्कृष्ट जीवन	20
16.	आपातकाल में बच्चे।	21

भारत में मोदी जी

गर्व है हमें भारत के नेता मोदी जी पर,
जिननेशुभ राह दिखाई जनता के हित पर,
उनसे ज्यादा गर्व है अपने भारतवासियों पर,
जिन्हें अटल विश्वास मोदी की राजनीतियों पर।

कैसी ये विडंबना घर में रहना सुरक्षित रहना,
आवाज है जनता की कोरोना को जड़ से हटना,
इस महामारी के भय से पैसा उद्योग एक ओर पड़े,
पर जीवन रक्षा हेतु कोरोना युध्द दूर से ही लड़े।

ऐसा कभी देखा सोचा नहीं, देश लगता श्रीविहीन सा,
घर के अंदर बैठा हर व्यक्ति लगता बेरोजगार सा,
40 दिन की लाक डाउन उनको भी सहर्ष स्वीकार किया,
ताली थाली शंख बजाया दीप जला सतकार किया।

देश तो देश विदेशों को भी दोस्ती से खींच लिया,
मोदी जी ने परोपकार प्रेमभाव से मनजीत लिया,
जान है तो जहान है, स्वस्थ रहें भाव सबके भीतर,
यह देख गर्व होता है अपने सबल भारतीयों पर।

बुंदेलीभाषा में कोरोना

कोरोना कोरोना
कब लो रेहै जो रोना
गुंइयां बड़ी मुश्किल परी है
सबले देशन में आफत परी है
टीवी में जोन उपाय बताएं तो सुनो ना
कोरोना कोरोना, फिर चलो जैहै जो रोना

चुड़ैल बनके आई जा बीमारी
ऐसी ना सुनी महामारी
देवी दाई कछु तो करो ना
कोरोना कोरोना, जीमे अब रहे ना रोना

सीधा साधो घर में खाओ
धूप लोभान को धुंआ कराओ
घर में रेके अरजी करियो
ईखौ भगाओ ना
कोरोना कोरोना, तबै मिटहै सबको रोना

बाहर मोंह में पट्टी बांधे रहियो
सबसे दुरई रहियो
आके हाथ-पांव धो डराओ ना
कोरोना कोरोना, ऐसैइ जेहै जो रोना

सबले रस्ता सूने डरे
मंदिर लौ सब बंद परे
घरई से कहियो मां बचाओ ना
कोरोना कोरोना, कब लौ रेहै जो रोना

महामारी का भय

महामारी का भय आदमी को शून्य सा कर गई,
व्यथा इतनी कि उसकी भावना भी सो गई।

करुण क्रंदन सुनता न कोई,न हृदय पसीजता,
जानबूझकर विवश हुए देख मन खीजता।

रोज कमाने वाले क्षुधित को नहीं मिलता निवाला,
घर अंदर बैठे हैं भूखे प्यासे कोई न देने वाला।

महामारी विपदा से मानव की कार्य गति रुक गई,
व्यथा इतनी कि उसकी भावना भी अब सो गई।

चीनियों का कोरोना वायरस सब पर चढ़ रहा,
एक दूसरे के स्पर्श से दुनिया भर में बढ़ रहा।

हिंदुओं का सादा भोजन दूर का अभिवादन भुला दिया,
पश्चिमी रंग देख अपनी संस्कृति परंपरा को जुदा किया।

आपातकालीन स्थित में मन को दृढ़ बनाना है,
घर में रहना सुरक्षित रहना नीति अपनाना है।

जान जोखिम में डाल सेवा कर्मी टीम जुट गई,
दीन-दुखी की पीड़ा हरने अपनी खुशी भूल गई।

एक दिया जलाएं

आयी विपत्ति पर हम क्यों रोएं,
उसे दूर करें दूजों को राह दिखाएं।

अंधकार को क्यों कोसें हम,
बेहतर है एक दिया जलाएं।

नकारात्मक सोच से बेहतर,
सकारात्मक रुख अपनाएं।

लाख दान पुण्य करने से बेहतर,
शिक्षा दान दे योग्य बनायें।

व्यर्थ विवादों से बेहतर,
स्वयं उदाहरण बन कर दिखलाएं।

शूल बने रहने से बेहतर,
खिले फूल सा और मुस्कायें।

कुरीतियों में उलझने से बेहतर,
उन्हें रोकने को कदम बढ़ाए।

गिरे हुए पर हंसने से बेहतर,
एक भटके को राह दिखाएं।

लंबे निरर्थक जीवन से बेहतर,
अल्प सार्थक जीवन पाए।

अंधकार को क्यों कोसें हम,
बेहतर है एक दिया जलाएं।

किसान की आपदा

कितना कठिन किसान को शक्कर चांवल गुड़ धोती।

रजत रात बीती विहंगावली फैलाकर आई,
उषा प्राची से प्रभात का स्वर्ण संदेशा लाई।

उठा किसान नित कर्मों को कर पहना कुर्ता धोती,
फिर लेने चला किसान शक्कर चावल गुड़ अरु धोती।

पहुंचा दुकान बोला शक्कर लेने आया दूर से,
पर तुम क्यों देख रहे हो मुझको घूर घूर के।

बंद रहेगी अभी दुकान बोली बोला वह मोटी,
अब लेने चला किसान चांवल गुड़ अरु धोती।

अमुक जगह पर चांवल लेने अति भीड़ खड़ी,
कड़ी धूप खूब थी वह सुस्ताया एक घड़ी।

ज्यों ही नंबर आया उसका, देखी दुकान बंद होती,
फिर अब चला किसान लेने गुड़ अरु धोती।

जब पहुंचा वह दुकान पर चारों ओर पुलिस थी,
बिना सोचे समझे पुलिस ने, उस पर भी चला दी लाठी।

भूखा प्यासा गिरा किसान, टूटी बोटी बोटी।
हाय गरीबों की कहानी, आंखों से गिरते अश्रु मोती।

कितना कठिन किसान को शक्कर चांवल गुड़ अरु धोती।

प्रकृति का कहर 2013

जय हो जय हो हे बद्री विशाल,
दीनों पर करो कृपा जो पड़े बेहाल।

ऐसी आफत कभी न आयी,
जैसी गंगा यमुना उफनायी।
कितनी इमारत बस्ती ढह गईं,
कितनी कारें टैक्सी बह गईं ।
हटाकर विपदा करो निहाल। जय हो जय हो.....।

सबकी नैया पार लगाने वाले,
क्यों फट गए ये बादल काले।
उत्तराखंड में मचा हाहाकार,
पड़े हजारों वहां लाचार।
88 वर्ष बाद क्यों दिखा रौद्र का ताल। जय हो जय हो.....।

भूखंड से हिल गया धाम,
वहां छा गया दुख का कोहराम
यह नजारा देख दिल दहल रहा,
ऐसे संकट में अंतर्मन सिसक रहा।
अब दूर करो मुसीबत का जंजाल। जय हो जय हो.....।

केदारनाथ में मंदिर भर शेष रहा,
क्या यह शिव का तांडव रोश रहा?
क्या यह मेघों का उद्वेग रहा?
फिर क्या तीर्थाटन का भाव रहा?
पर जो भी है,संकट टाल करो खुशहाल। जय हो जय हो.....।

नए वर्ष पर शुभकामना

नए वर्ष में नई सोच में रहे नयी खुशहाली,
नए चमन में नए सुमन खिलाने बन जाओ माली।

जीवन की सुंदर राहों में नित हो नया सबेरा,
नई उमंगे लेकर हर मानव में हो प्रेम घनेरा।

अंबर तल में पशु पक्षी का भी नया सबेरा,
कोयल गाए नाचे मोर गुंजार करे ये भौंरा।

गीत संगीत की वीणा से होवे नई झंकार,
नववर्ष प्रकृति के मेले में खुशी मिले अपार।

बीते वर्ष के मूल अनुभव से ज्ञान आभा दमके
जैसे नील गगन में सूरज तारे चंदा चमके।

प्राकृत श्वेत कहर नव पुंज को ढूंढ रहा,
अंबर में विहंगों का नव स्वर गूंज रहा।

मानव जीवन के आंगन में प्यार का रंग बरसे,
प्रेम व्यवहार की निर्मल धारा से सब हृदय हर्षे।

सारे जग का तिमिर दूर हो, छाए नव उल्लास।
जले अखंड ज्योति नव वर्ष में, फैले दिव्य प्रकाश।

विचारों को लगाम दो

जीवन है थोड़ा जी भर कर जी लो,
सारी चिंताएं छोड़ कर विचारों को लगाम दो।

भूतकाल की कुछ यादें आतीं, बड़ा तड़पातीं हैं,
भावी चिंताएं भी परेशानियों का रुख बढ़ाती है।

भूत भविष्य को भूलकर वर्तमान में जियो,
सारी व्यथाएं छोड़ कर विचारों को लगाम दो।

सकारात्मक विचार मन प्रफुल्ल आ जाते हैं,
नकारात्मक विचार आते तो निरुत्साहित कर जाते हैं।

सदा मौज मस्ती में जियो, दूसरों का मंगल करो,
सभी व्याधियों को छोड़कर विचारों को लगाम दो।

क्या बीता क्या आने वाला इसी में समय गंवाता है,
विचारों का मंथन मन में तूफान लाता है।

आपदाओं को भुलाकर रास्ता निकलने का देखो,
मुस्कान से दुख दर्द पर विजय पा लो।

सदा मौज मस्ती में रहो दूसरों का मंगल करो,
सारी चिंताएं छोड़ कर विचारों पर लगाम दो।

हिन्दी का महत्व

हिन्दी हिन्दी नित कहो, हिन्दी का सबको ज्ञान।
हिन्दी संस्कृत से जन्मी, संस्कृति मां की शान।।

जैसे नारी का बिंदी बिन सूना लागे माथा।
वैसे भारत मां के भाल पर हिन्दी की है गाथा।।

निज देश में निज भाषा का, करो भूरि भूरि सम्मान।
हर भाषा के ज्ञाता रहो, पर हिन्दी बिन धूरि समान।।

अंग्रेजी बेड़ी दूर कर, हिन्दी भाषा का लौट आया दौर।
हिन्द में हिन्दी राष्ट्रभाषा बनी सब में सिरमौर।।

राष्ट्रभाषा बिन राष्ट्र नहीं चंगा, हिन्दी तो उज्जवल गंगा।
हिन्दी बोली हर बोली से मीठी, इसकी गरिमा रहे न फीकी।।

हर प्रदेश में अपनी सम्मानित है प्रादेशिक भाषा।
पर इन सब में एकीभाव बनाने है हिन्दी संपर्कित भाषा।।

सभी प्रदेश इक दूजे से हिन्दी भाषा में करें पहचान ।
तभी गर्व से कहते हम जय हिन्द हिंदुस्तान महान।।

हिन्दी रूपी डोरी में गुथी हुई पुष्प प्रांतीय भाषा।
जिसकी बनी माल से सुशोभित है भारत माता।।

देश-विदेश कहीं भी हो, पर बदलना नहीं परिभाषा।
हिंदुस्तान के सच्चे प्रहरी, हिन्दी हमारी मातृभाषा।।

गुरु की महिमा

गुरु की महिमा परम महान, करो श्रद्धा से इनका गुणगान।

आपातकालीन नजारा जो शुभ राह बताए गुरु हमारा।
गुरु के शिक्षक अध्यापक टीचर हैं पर्याय,
इनके हर अक्षर में ज्ञान का अर्थ समाय।
गु से गुण अनमोल गुरु ही सिखाते।
रू से रुचि अंतर्मन में जगाते।
गुरु की महिमा गुरु की शान, करो श्रद्धा से इनका सम्मान।

अब शिक्षक को पहचानो, इनके नाम का अर्थ को जानो।
शि से शिक्षा शिक्षक ही देते।
क्ष से क्षति कभी होने न देते ।
क से कमियां सब की पूरी हरते।
जीवन संभले ऐसा ज्ञान वे भरते।
गुरु को समझो हरि समान,करो श्रद्धा से इनका सम्मान।।

अबे टीचर शब्द आया, अंग्रेजी है पर मन को भाया।
टी से टीस कभी न होने देते।
च से चहुं ओर विकास न खोने देते।
र से राहें दुनिया की दिखाते।
आगे बढ़ने की नीति सिखाते।।
गुरु जग के शिरोमणि जान, करो श्रद्धा से इनका सम्मान।

अध्यापक की है बारी, इनको जाने दुनिया सारी।
अ से अमित ज्ञान अध्यापक देते।
ध्या से ध्यान सभी का रखते।
प से पतवार सभी की खेते।
क से कल्याण जगत का करते।।
गुरु की महिमा गुरु का ज्ञान, करो श्रद्धा से इनका सम्मान।।

सब कुछ बदल गया

न जाने कैसा आया जमाना, सब कुछ बदल गया।।

पहले हर मौसम के अंदाज़ सुनहरे होते,
अब उसमें भी बेरुखी बदलाव नजर आते।
पहले बड़े भोर सूर्य निकलने की राह देखते,
अब सूर्य ही हम सबका सोया मुख चूमते। न जाने,...।

पहले गर्मी में पानी सींच छत पर सो जाते,
अब कूलर ए.सी. के बिन कोई रह न पाते।
पहली छुट्टी में खेल गीत कहानी में समय बिताते,
अब टीवी मोबाइल गेम भी कम पड़ जाते। न जाने,...।

पहले एक दूजे के घर जाकर प्रेम बढ़ाते ,
अब व्हाट्सएप में ही सब अपना प्रेम जताते।
पहले बड़े बूढ़ों के आगे झुककर आशीष पाते,
अब दो टूक जवाबों में न सकुचाते। न जाने,...।

पहले पढ़ाई संग व्यावहारिक ज्ञान लाभ उठाते,
अब ऊंची नीची बातों के संग बस्ते का भार उठाते।
पहले ये नन्हे प्यारे बच्चे भोली भाली बातें करते,
अब टीवी सीरियल देख सब के कान काटते। न जाने,...।

पहले सम्मिलित परिवार में खुशियों का डेरा पाते,
अब एकल परिवार में रहना अपनी पसंद बताते।
पहले सीमित साधन में ही आनंद का जीवन जीते,
अब हर सुख-सुविधा के बाद भी खुश न रहते। न जाने,...।

मानव वही महान है

जिसके निर्भय चरण चढ़े हैं कठिनाई के भाल पर,
जिसका साहस शासन करता आंधी और भूचाल पर,
उसके दर पर खड़ी सफलता करती नित जय गान है,
मानव वही महान है।

रूढ़ियां कभी मार्ग में जिसके वाधा नहीं डालतीं,
नए विचारों की झंझायें जिसका पंथ निहारतीं,
पीकर काला तिमिर निशा का लाता नया विहान है,
मानव वही महान है।

मानव जिसकी जाति और मानवता ही बस धर्म है,
पर हित करना ही जिस के आदर्शों का मर्म है,
रहकर स्वयं विनीत दूसरों को देता सम्मान है,
मानव वही महान है।

जिसका जीवन सुमन महकता प्यार और त्याग से,
भरा हुआ है हृदय मानव सेवा अनुराग से,
अभिमान से हुई ना मैली जिसकी उज्जवल शान है,
मानव वही महान है।

जिसने इंसानियत बचाई बेईमान की तलवार से,
पूंजी नहीं बढ़ाई जग में दो नंबर के व्यापार से,
सत्य अहिंसा और कर्तव्यों में ही जिसका रुझान है,
मानव वही महान है।

जल का जानो मोल

धरती तप रही तवे सी, सूरज बरसाए अंगार।
बिन पानी प्यासे सभी, मचा है हाहाकार।

जंगल में पेड़ों का विनाश कर,हमने की मनमानी।
नदिया नाले सूख गये, अब बोतल बंद है पानी।

बंजर धरती को किया, खोद खोद नलकूप।
गर्मी भी अब दिखा रही अपना तांडव रूप।

महंगाई की मार से, बजट बिगाड़े चाल।
पानी भी अब खरीदते, हो रहे हाल बेहाल।

सब जल बिन तड़पे मीन से, जल तो है अनमोल।
जल जीवन और प्राण है, जल का जानो मोल।

प्रदूषण मुक्त करो धरा, वृक्ष लगाओ चारों ओर।
महाविनाश से बचना है, तो बूंद-बूंद जल जोड़।

दैनिक हर क्रियाओं में, सबमें चहिए जल।
इसके बिना नर या जानवर हो जाते विकल।

जल बिना हरी भरी वसुंधरा, लगती है वीरान।
जल कमी भी आपात काल का,रूप दिखाए जहान।

उत्कृष्ट जीवन

सुख दुख में जो रहे समान, अधर पर रहे सदा मुस्कान,
ह्रदय में करुणा प्यार हो, दीन दुखियों को दें दान।

वाणी में मधुर मिठास रहे, संतप्त ह्रदय भी हो शीतल,
परोपकारी रहे जीवन, कर्तव्य परायण हो हर पल।

कर्तव्यनिष्ठ जीवन हो, बनाता जो सुख मय संसार,
तभी सफल यह मानव जन्म, विश्व उन्नति का जो आधार।

कांटो के बीच पुष्पित पल्लवित होता,
खिलकर देता सौरभ दान,
ऊंचे शिखरों से गिर कर, कराती सरिता जलपान।

कलरव करती नदियों से ले ताप, मेघ नभ में छाते चहुं ओर।
स्वयं मिटा कर निज अस्तित्व, बरसते धरा में घनघोर।

अंबर से अवनी में सूर्य, हम सबको देते प्रकाश।
तारों भरी मध्य रात्रि मैं, चंद्र देते शीतल आभास।

स्वयं नष्ट होकर बीज, निकलता पौधा धरती चीर।
सदा देता फल फूल दान, सहकर प्रचंड ताप नीर।

प्रभु की सब विभूति पाकर, न रखो किसी से बैर भाव।
हिल मिलकर रहो प्यार से, सदा रखो सद्भाव।

दया प्रेम साहस हो मन में, सबके प्रति चित्त उदार।
जिएं जीवन ऐसा उत्कृष्ट, खुशी मिले दिल में अपार।

मानव संरक्षण

मानव मात्र का संरक्षण ही,
अब एकमात्र धर्म है।
जो दिया परमात्मा ने हमें,
उसे दीनों में बांट यही कर्म है।

अकाल भूचाल समय चक्र,
आते जाते ही रहते हैं।
जो गरीब असहायों को बचाते,
दूसरों की रक्षार्थ दुख सहते हैं।
डॉक्टरपुलिस, सेवाकर्मी आज ये बड़े महान,
अपने को जोखिम में डालकर सबकी बचाते जान।

कभी नहीं भूलना इनका एहसान,
ये मानव हैं देश की अनूठी शान।
ऐसे विशेष परोपकारी में ही,
मानवता के सच्चे लक्षण रहते हैं।
अपने कर्तव्यों में डट कर,
सदा सहायक बन रहते हैं।

तन मन धन से करो कल्यान,
दान भी करो पर मत करना अभिमान।
किसी को न निरूत्साहित करना न निराश,
विपत काल में विजय की रखना आस।
सदा रहना सजग हर काल,
उद्यमयुत व्यक्ति ही रहता खुशहाल।

आपातकाल में बच्चे

आज देख परिस्थित बच्चे भी सहमें से हो गये,
बाहर निकलकर खेलकूद मस्ती सब गुम हो गये।

अब दुर्बलता इनमें न आए समयाधार सही सीख देना है,
सादा जीवन उच्च विचार के भाव इनमें भर देना है।

घर में आएं बाहर से, हाथ पैर धोना स्वच्छता इन्हें सिखाना है,
शुद्ध शाकाहारी बने अहिंसा सदाचार पाठ पढ़ाना है।

दूसरे देश से मैत्री रखें, पर सदा सावधान रहना है,
हम पर किसी की कुदृष्टि न हो, तीखी नजर रखना है।

भोला सा स्वभाव बच्चों का, सबके मन को भाए।
भरा रहे जीवन खुशियों से, दुख कभी ना आए।

धीर वीर स्वस्थ साहसी बनकर हर स्थित में सजग रहें,
दीन दुखी की सेवा कर देश प्रेम का उत्साह भरें।

आंधी तूफान में भी बच्चे पाषाण से अडिग रहें,
ज्ञान दीप जलाकर, सत्य मार्ग पर बढ़ते रहें।

आज के ये प्यारे बच्चे, कल बनेंगे वीर महान।
देश हित में सबल रहें, जग करे गुणगान।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

उमा सुहाने

रायपुर (छत्तीसगढ़)

Mobile -9302683229

आपातकालीन स्थिति समय चक्र के चलते हुए धरा में कई रूपों में हमारे समक्ष आती है। कभी देश में आंधी तूफान, भूकंप, कभी अधिक ताप, अधिक जल वृष्टि का तांडव दिखाती है। जैसे अभी महामारी कोरोना सुरसा की तरह मुंह फैलाए खड़ी है यह आपातकालीन स्थिति पूरे विश्व मैं ही तन मन धन से क्षतिग्रस्त है, इसने सभी देशों का वर्तमान और भविष्य दोनों को झकझोर डाला है, सभी वर्ग के व्यापारियों के उद्योग बंद से पड़े हैं, इससे आर्थिक स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ा है। जो रोज कमाने वाले लोग हैं, उनकी तो हालत काफी दयनीय है।

आज भारत के नेता मोदी जी अपनी कुशल नीतियों से संकट निवारण के उपाय कर रहे हैं, बड़ी सावधानी रखते हुए जनता की रक्षा का कदम उठाया है। ज्यादातर गरीबों को सरकारी अनुदान की व्यवस्था के साथ कई बड़ी पार्टियों ने भी सहायतार्थ बहुत रुपये अनुदान किया है। निशुल्क सेवाएं दी जा रही हैं, लॉकडाउन करके लोगों को संसर्ग में आने से बचाने का प्रयास किया है।

इस कार्य में हमारी संस्था अंतरा शब्दशक्ति भी पूर्ण रूप से आपातकाल में सहयोग सेवा प्रदान कर रही है। और इनके इस ओर बढ़ते कदम काफी सराहनीय हैं।

मैंने अपनी रचनाओं मैं अपने कुछ विचार व्यक्त किए हैं, जिन्हें पढ़कर शायद सभी अभिभूत होंगे और सभी से प्रेम भाव रखेंगे।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-164-0

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/